

करुणा निधान रघुवर जीवन आधार है ।  
 शोभा सनेह सागर छबि बेशमार है ॥  
 जिनके नैनों में करुणा नितु छलक रही है  
 निश्चर रुई उड़ाने को वायु संचार है ॥  
 नव नीरद कान्ति रघुवर सूरज समान है  
 सब कान दे के सुन लो वह इष्ट हमार है ॥  
 निमि नंदनी नेह जांके अंग अंग समाया  
 सुर चिन्ता से है भरे नैनों में दाया  
 वह कोई लीला मूरती है मेरा उर श्रंगार है  
 भूतनाथ लूटता है जांके नाम का आनंद  
 जांकी सेवा में मगन है कपि भालू के वृंद  
 सेतु बांध दर्ई सिंधु पर वीरता भण्डार है ॥  
 उनकी महिमा गा रहा है भयभीत हो सागर  
 रवि वंश का श्रंगार प्रिय प्रेम में नागर  
 मन डूबा श्याम लीला में जिसका न पार हैं ॥

सौमित्रि करे सेवा बोए अधखिली कली  
नन्ही कलशी भर के सींचिती मिथिलेश की लली  
धन्य पंच वटी वाटिका करे राम प्यार है ॥

सियाराम शोभाधाम स्वर्ण सेज विराजें  
लखि अंग शोभा जिनकी घन दामिनी लाजे  
रसिको के हित करे लीला विहार है ॥

रघुनाथ हाथ शोभे पुष्प माला मनोहर  
प्रिया जूड़े में लपेटते सप्रेम कमलकर  
सौंदर्य मुग्ध राम जी रस अगार है ॥

सब के जो शरणदाता सुर शत्रुओं के विजई  
कृपा सुधा की वर्षा जो करते नितु नई  
प्रिया प्रेम रंजन हृदय रघुवर उदार है ॥

निगम अगम पुरुषोत्तम श्री राम है प्यारे  
दुष्ट दमन प्रभु करुणा कर दीन दुख निवारे  
यश धुजा फहरे गगन में जन उर उज्यार है ॥

दीन पालने में परम चतुर अभय के दानी  
नम्र शील से झुकायो परशुराम गुमानी  
राम लाल कौशल पै बान्हड़ी बलहार है ॥